P1 Th
12067
University of Baroda

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा
हिन्दी विभाग की

पीएच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

"साठोत्तरी हिन्दी गीतों एवं नवगीतों में संस्कृति और संवेदना के विविध आयाम"

शोध छात्रा

सुगन्ध लता यादव

F.W.C.S
16-2-09
Head,
Department of Hindi
M. S. University of Baroda
BARODA

Fwcs
V Chaturvedi
(Guide)

निर्देशक :

डॉ. विष्णु चतुर्वेदी

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, म. स. विश्वविद्यालय

बड़ौदा – 390002.

2009

प्राक्कथन

गीतों के प्रति मेरी अभिरूचि बहुत पहले से रही है, जब मैं बी.ए. के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रही थी तब छायावाद और छायावादोत्तर गीतों की नई भंगिमाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया। अनेक वरिष्ठ मंचीय गीतकारों को मैंने श्रवण भी किया है, जिनमें वीरेन्द्र मिश्र, नीरज, सोमठाकुर, भवानी प्रसाद मिश्र, नागार्जुन, किशन सरोज जैसे वरिष्ठ गीतकारों का समावेश था। एम. ए. के अध्ययन काल में साहित्यिक गीतों के प्रति मेरी और भी अभिरूचि बढ़ी और मैंने हिन्दी के तमाम गीतकारों एवं नवगीतकारों के गीत एवं नवगीत पढ़े और समझे और यहीं मैंने तय कर लिया था कि हिन्दी की इस रागात्मक काव्यधारा को अपने शोध का विषय बनाकर पीएच.डी. करूंगी।

कालांतर में सौभाग्य और संयोग से डॉ. विष्णु विराट जैसे स्थापित साहित्यकार का साहचर्य और संरक्षण मुझे प्राप्त हुआ और इन्हीं के अनुग्रह से इन्हीं के निर्देशन में मैंने अपना शोध विषय पंजीकृत करा दिया। और आज बहुत दूर तक अध्ययन मनन करने के बाद में इस मुकाम पर आ सकी हूं कि अपना शोध प्रबन्ध

सम्पन्न करके पी.एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत कर सकूं।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है-

प्रथम अध्याय में गीत और नवगीत की परिभाषा एवं विस्तृत आशय के साथ गीत से नवगीत तक की सृजन यात्रा, कथ्य, शिल्प, एवं प्रस्तुति के विविध रूपों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इनमें गीतों की प्रारंभिक भूमिका के साथ उसके सतत विकासक्रम को भी र्स्पश करते हुए उसके विभिन्न पड़ावों को भी विवेचित किया गया है ओर इसी क्रम में नवगीत के प्रस्थापन की भूमिका के साथ नवगीत की जमीन और उसके परिवृत्त को भी विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय में गीतों एवं नवगीतों की सांस्कृतिक छवि स्पष्ट करते हुए उसके विभिन्न परिदृश्यों को सामने रखने का प्रयत्न किया गया है। इसमें विशेषकर नवगीतों के वर्ण्य विषय को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय मे गीतों एवं नवगीतों की विवेचना के बाद प्रमुख गीतकारों एवं स्थापित नवगीतकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिचयात्मक दृष्टि डाली गयी है तथा उनकी गीतात्मक छवि को स्पष्ट करने का प्रयास भी किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में संवेदनाओं के धरातल पर गीतों एवं नवगीतों की पहचान दर्ज की गई है। विशेष करके नवगीतों की संवेदनात्मक भावभूमि को विवेचित किया गया है। इस प्रकार से इस अध्याय में गीतों एवं नवगीतों के स्थापित अन्तराल को तथा उनके ऐक्य को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय में ग्राम्य एवं नागर संस्कृति के परिदृश्य, पारिवारिक एवं गृहस्थ संस्कृति के विविधरूप, समाज, धर्म, संस्कार आदि के विस्तृत पटल को नवगीतों

एवं गीतों के संदर्भ में व्याख्यायित किया गया है।

षष्ठ अध्याय में गीतों एवं नवगीतों के शिल्प एवं भाषा के सन्दर्भ में निरूपित वृत्त को विवेचित किया गया है तथा उनके संरचनात्मक वैशिष्ट्य को भी विवेचित किया गया है।

सप्तम अध्याय में विहंगावलोकन करते हुए संपूर्ण परिशोध का मूल्यांकन एवं उसके विशिष्ट प्रदान को सामने रखकर ग्रंथ का उपसंहार सम्पन्न किया गया है।

अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची एवं अन्य विवरण के साथ शोध प्रबन्ध सम्पन्न हुआ है।

मेरी इस शोधयात्रा में सर्वाधिक सहयोग और सहायता मेरे गुरु डॉ. विष्णु विराट की रही है जो स्वयं एव विशिष्ट गीतकार के रूप में राष्ट्रीय अविधारा में प्रतिष्ठित एवं चर्चित हैं तथा नवगीत के संदर्भ में उनके विशिष्टप्रदान को एक सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। सौभाग्य से मेरे शोध काल में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आप अध्यक्ष के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा आपका गीतकारों एवं नवगीतकारों से राष्ट्रिय स्तर पर सीधा संपर्क भी है तथा आपके निजी ग्रंथागार में गीतकारों एवं नवगीतकारों के प्रतिनिधि संकलन भी उपलब्ध हैं। इन सबका मैंने लाभार्जित किया तथा आपके योग्य निर्देशन में मेरा यह कार्य सम्पन्न हो सका। मैं हृदय से इनके प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरी इस शोधपात्रा में हिन्दी विभाग के जिन विद्वानों, साहित्यकारों एवं गीतकारों का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ हैं मैं उनके प्रतिभी अपना धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। हिन्दी विभाग की वरिष्ट रीडर डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. सन्नो पाण्डेय, डॉ. कल्पना गवली, डॉ. एन. एस. परमार, डॉ. कनुभाई निनामा, एवं डॉ. ओ. पी. पाल का मैं विशेषरूप से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सतत सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

मेरी शोध यात्रा में सर्वाधिक सहयोग और सहायता हेतु मेरे भाई म. स. विद्यालय के सेनेट सदस्य डॉ. दिनेश यादव की मैं हृदय से ऋणी हूँ जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन से मैं यह महत् कार्य सम्पन्न कर सकी हूँ।

इस सम्पूर्ण सफलता को मैं अपने पूज्य पिता स्वर्गीयश्री नरेन्द्रसिंह यादव की विशिष्ट कृपा का फल मानती हूँ जिनके शुभाशीष से में यह कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न कर सकी हूँ, मैं अपनी ममतामयी माँ के प्रति भी श्रद्धानत हूँ जिनके सतत स्नेह ने मुझे हर दिशा में प्रोत्साहित और प्रेरित किया है।

में अपने पति श्री महेश कुमार यादव के प्रति भी स्नेहिल एवं आत्मीय कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनका सतत प्रोत्साहन और सम्बल मुझे प्राप्त होता रहा है।

अंत में मैं उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी परोक्ष या प्रत्यक्ष सहायता मुझे इस शोधकार्य में प्राप्त हुई है। इन सबकी सहायता एवं सहयोग के बिना यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न हो पाता एतदर्थ सभी सहायकों, आत्मीय एवं सहयोगियों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

निवेदक

Sugandh

(सुगन्धलता यादव)